मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।विष्णुः, ४-६ इन्द्राविष्णू। त्रिष्टुप्।

परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति।
उभे ते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से॥ ७.०९९.०१

मात्रया परः- परस्ताद्वर्तमानया अपरिमितया। तन्वा। वृधान- वर्धमान। ते- तव। महित्वम्- माहात्म्यम्। न। अन्वश्नुवन्ति- अनुव्याप्नुवन्ति। पृथिव्याः- भूम्या आरभ्य। उभे रजसी- भूमिमन्तरिक्षम्। ते- तव। विद्म- जानीमः। देव- द्योतनशील। विष्णो- सर्वव्यापिन्। अन्तर्यामिन्। त्वमेव। परमस्य- तृतीयं नभः। वित्से- जानासि ॥१॥

न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप।
उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथिव्याः॥ ७.०९९.०२

विष्णो- व्यापनशील परमात्मन्। देव- द्योतनशील। जातो जायमानो वा। ते- तव। महिम्नः- माहात्म्यस्य। पारम्- अन्तम्। न। आप- प्राप। ऋष्वम्- दर्शनीयम्। बृहन्तम्- महान्तम्। नाकम्- द्युलोकम्। उदस्तभ्नाः- ऊर्ध्वमधारयः। पृथिव्याः- भूमेः। प्राचीम्- प्राचीनम्। ककुभम्- उत्कृष्टं स्थानम्। दाधर्थ- धारितवानसि ॥२॥

इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः॥ ७.०९९.०३

इरावती- अन्नवत्यौ। धेनुमती- गोमत्यौ ज्योतिष्मत्यौ। सूयवसिनी- शोभनयवसे। मनुषे- मनुष्याय। दशस्या- दानशीले। हि- खलु। भूतम्- विष्णवनुग्रहेण अभवताम्। विष्णो- व्यापनशील अन्तर्यामिन्। एते- इमे। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। व्यस्तभ्नाः- अधारयः। पृथिवीम्- भूमिम्। अभितः। मयूखैः- स्वकिरणैः। दाधर्थ- अधारयः ॥३॥

उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम्।

दासस्य चिद्वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु॥ ७.०९९.०४

यज्ञाय- दानाय। देवपूजायै। सङ्गतिकरणाय। उरुम्- विस्तीर्णम्। लोकम्। चक्रथुः- अकुरुथम्। सूर्यं- सवितारम्। उषासम्- उदयदेवताम्। अग्निम्- पावकम्। जनयन्ता- सृजन्तौ। वृषशिप्रस्य- वृषहनोः। दासस्य- उपक्षपयितुः। मायाः- मिथ्याशक्तीः। पृतनाज्येषु- युद्धेषु। नरा- नेतारौ। जघ्नथुः- नाशितवन्तौ ॥४ ॥

इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्नथिष्टम्।

शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान्॥ ७.०९९.०५

इन्द्राविष्णू। शम्बरस्य- मेघस्य जडप्रतीकस्य। दृंहिताः- दृढीकृतानि। नव नवतिं च- बहूनि। पुरः- बन्धनानि। श्नथिष्टम्- अबाधेथाम्। श्नथ हिंसायाम्। शतं सहस्रम्- अनन्तान्। वर्चिनः- बलिनः। असुरस्य वीरान्- शत्रून्। अप्रति- अप्रतिगतान्। साकम्- युगपदेव। हथः- नाशितवन्तौ ॥५ ॥

इयं मनीषा बृहती बृहन्तोरुक्रमा तवसा वर्धयन्ती।

ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिन्वतमिषो वृजनेष्विन्द्र॥ ७.०९९.०६

इयम्- एषा। मनीषा। बृहती- महती। बृहन्ता- महान्तौ। उरुक्रमा- विस्तीर्णविक्रमौ। तवसा- बलेन। वर्धयन्ती। विदथेषु- यज्ञेषु। वाम्- युवयोः। स्तोमम्- मन्त्रम्। ररे- यच्छामि। विष्णो- सर्वव्यापिन्। इन्द्र- ईशनाधिदैवत। इषः- मनीषाः। पिन्वतम्- वर्धयतम् ॥६ ॥

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।

वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७.०९९.०७

शिपिविष्ट- चिद्रश्मिभिराविष्ट। अन्तर्यामिन्निति भावः। ते- तुभ्यम्। वषट्। आ कृणोमि। करोमि। तत्। मे- मम। हव्यम्। जुषस्व- सेवस्व। सुष्टुतयः- शोभनस्तुतयः। मे- मम। गिरः- वाचः। त्वा- त्वाम्। वर्धन्तु। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥